विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -षष्ठ दिनांक - 11-11-2020

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -13 साँप की मणि नामक शीर्षक के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे।

साँप की मणि मुंशी प्रेमचंद

मैं जब जहाज़ पर नौकर था तो एक बार कोलंबो भी गया था। बहुत दिनों से वहाँ जाने को मन चाहता था, खासकर रावण की लंकापुरी देखने के लिए । कलकत्ते से सात दिन में जहाज कोलम्बो पहुँचा । मेरा एक

दोस्त वहां किसी कारखाने में नौकर था, मैंने पहले ही उसे खत डाल दिया था । वह घाट पर आ पहुँचा था। दम दोनों गले मिले और कोलम्बो की सैर करने चले। जहाज़ वहां चार दिन रुकनेवाला था। मैंने कप्तान साहब से चार दिन की छुट्टी ले ली ।

जब हम दोनों खा-पी चुके, तो गप शप होने लगी। वहाँ के सीप और मोती की बात छिड़ गई। मेरे दोस्त ने कहा-यह सब चीज़ें तो यहाँ समुद्र में निकलती ही हैं और आसानी से मिल जायेंगी, मगर मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ दूंगा जो शायद तुमने कभी न देखी हो

। हाँ, उसका हाल किताबों में पढ़ा होगा।

मैंने ताअजुब्ब से पूछा-वह कौन-सी चीज है ?
'साँप का मणि।"
मैं चौंक उठा और बोला-साँप का मणि !
उसका जिक्र तो मैंने
किस्से-कहानियों में सुना है कौर यह भी
सुना है कि उसका मोल
सात बादशाहों के बराबर होता है । क्या
साँप का असली मणि ?
वह बोले-हां भाई, असली मणि । तुम्हें मिल जाय तब तो मानोगे।

मुझे विश्वास न हुआ । वह फिर बोले-यहाँ पचासों किस्म के सांप हैं, मगर मणि एक ही तरह के साँपों के पास होता है। उसे कालिया कहते हैं। यह बात सच है कि यह चीज़ मुश्किल से मिलती है। पचासों में शायद एक के पास निकले । मगर मिलती जरूर है।

मैंने सुना था कि साँप मणि को अपने सिर पर रखता है, मगर यह बात ग़लत निकली। मेरे दोस्त ने कहा-यह चीज़ उसके मुँह में होती है ।

मैंने पूछा-तो मुँह के अन्दर से चमक कैसे नज़र आती है !

लिखकर याद करें।